रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

आवश्यक सूचना

नोट बन्दी से उपजी परेशानी के कारण

A Saga of Electro Homoeopathy (A Documentry Film) के लोकार्पण पर आने वाले साथियों के कष्ट को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया है अगली तिथि शीघ्र घोषित की जायेगी।

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –38 ● अंक –23 ● कानपुर 1 से 15 दिसम्बर 2016 ● प्रधान सम्पादक – डा० एम० एच० इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

इलेक्ट्रो होम्योपैथों को गम्भीर व असाध्य रोगों पर उपयोगिता सिद्ध करनी होगी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कीर्ति को यदि अक्षुण रखना है तो हमें कार्य को प्रमुखता देनी होगी, इतिहास यह बताता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का जन्म बीमारियों के समूल नाश के लिए किया गया था डा० मैटी ने उस समय देखा कि जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां थीं उनसे रोग का समूल नाश नहीं होता था बल्कि लक्षण कुछ समय के लिए दब जाते थे जोकि विपरीत परिस्थितियों के आने पर पुर्नजीवित होकर शरीर को रोगग्रस्त कर देते थे। डा० मैटी के अनुसार शरीर का रोगग्रस्त होना रस और रक्त के असतुंलन से होता है जब यह दोनों संतुलित अवस्था में होते हैं तो शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है। रोगों का जन्म परिस्थिति जन्य होने के साथ बहुत कुछ मनुष्य के आहार विहार पर निर्भर करता है, जब आहार विहार में खराबी आती है तो ऐसे लक्षण प्रकट होते हैं जो कि शरीर को रोगग्रस्त कर देते हैं। डा० मैटी का मानना था कि एक रोग में कई लक्षण एकसाथ प्रकट होते हैं इसलिए हर लक्षण के आधार पर औषधि का चयन कर रुग्ण शरीर का इलाज करना होता है अर्थात संयुक्त लक्षणों वाले रोग के लिए संयुक्त औषधि की आवश्यकता होती है। तत्समय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का जर्मनी और इटली मो बोल–बाला था इसलिए मैटी के इस विचार को वहां के चिकित्सकों ने हास्यस्पद बताया था, यह तो कालान्तर में उनके इस विचार को होम्योपैथी ने ही स्वीकारा, आज की जो होम्योपैथी है उसमें कहीं न कहीं मैटी के विचारों का मिश्रण दिखायी देता है। होम्योपैथी को देश में मान्यता मिल चुकी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता के लिए संघर्षरत है मान्यता वह विषय है जिसपर सरकार को निर्णय लेना होता है, निर्णय लेने के लिए सरकार के पास बहुत सारे पहलू व मापदण्ड हैं हमें उन मापदण्डों और पहलुओं को पार करना है। तभी जाकर हम सरकार की कसौटी पर खरे उतरेंगे जो मापदण्ड बनायें जाते हैं वह कार्यों के मूल्यांकन और उसकी योग्यता के निर्धारण के लिए होते हैं। जब होम्योपैथी को मान्यता मिली थी उस समय परिस्थितियां दूसरी थीं चिकित्सा शिक्षा का इतना विकास नहीं था, इतना वैज्ञानिक विश्लेषण भी नहीं होता था यदि हम होम्योपैथी की मान्यता पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट नजर आयेगा कि कार्य के आधार पर ही होम्योपैथी को सरकार द्वारा मान्यता दी गयी थी यदि हम थोड़ा पीछे दृष्टि डालें तो हमें दिखायी पड़ेगा कि उस समय भी होम्यो पैथी में बहुत काम हुआ था सर्वाधिक धर्मार्थ व दातव्य चिकित्सालय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के ही दिखायी पड़ते थे।

इन्हीं चिकित्सालयों का परिणाम था कि गरीब जन से लेकर मध्यम मध्यवर्गीय तक होम्योपैथी की पहुँच हो गयी पहले लोगों ने कहा कि छोटी मीठी–मीठी गोलियां शरीर पर क्या प्रभाव डालेंगी ?लेकिन जब इनका प्रभाव सकारात्मक दिखा तब समाज में वह सन्देश गया कि यह चिकित्सा पद्धति लाभकारी है, समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से जुड़ गया इसका परिणाम यह हुआ कि जो अपने आप को सम्रान्त धनाढ्य व अभिजात्य मानते थे उन्होंने भी होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारा। शैनेः शैनेः होम्योपैथी जनरूचि में शामिल हो गयी।

- गम्भीर रोगों को ठीक करने में है महारत
- योग्यता और अनुभव का पूरा प्रयोग हो
- अधिकार और कर्तव्यों में कर्तव्य को प्रमुखत:
- कैंसर ठीक करने के दावे को सिद्ध करें
- स्वांस रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी गुणकारी
- शरीर के अनुकूल हैं औषधियां
- दावों को सिद्ध करने का उचित समय
- डेंगू और चिकनगुनियां पर अजमायें हाथ

यही व्यवस्था यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रारम्भ कर दी जाये तो इसमें कोई दो राय नही है कि इस चिकित्सा पद्धति का विकास न हो पाये। जिस विकास की राह में हम सब पंक्तिबद्ध होकर खड़े हैं उन्हें परिणाम मिलने लगेंगे, काम करने के लिए जो वातावरण होना चाहिये वह हमें उपलब्ध है सिर्फ हमें अपनी मनोदशा में परिवर्तन लाना है, कार्य के प्रति भाव उत्पन्न करने हैं, परिणामों की चिन्ता किये बगैर हम सबको अपनी पूरी क्षमताओं का प्रयोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्य क्षेत्र में लगाना चाहिये, बीमारियां तो बहुत सारी हैं हर एक पर विजय पाना सम्भव नहीं है लेकिन कुछ ऐसी असाध्य बीमारियां जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों के लिए भले ही असाध्य हों परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इन बीमारियों की सफल चिकित्सा उपलब्ध है। एक सर्वे के अनुसार भारत में लगभग 8 प्रतिशत लोग विभिन्न तरह के कैंसर से पूरी तरह पीड़ित हैं और जो प्रचलित चिकित्सा पद्धतियां हैं उनके चिकित्सक इस गम्भीर बीमारी के उपचार के नाम पर आर्थिक शोषण भी करते हैं। सिंकायी और कीमोथेरैपी के नाम पर मंहगी–मंहगी दवाईयां रोगियों को लिखी जाती हैं और विवश हो कर रोगी व उनके परिजन कष्ट दूर होने की आशा में सब कुछ सहन करते हैं। कैंसर में रोगी को जिस भंयकर पीड़ा का अनुभव होता है जिसका वर्णन करना आसान नही है मात्र रोगी ही नहीं उसके परिजन भी उसकी इस पीड़ा को सह नहीं पाते हैं परिणामतः जो जहां जानकारी पाता है लाभ के लिए वहां पहुँच जाता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इस गम्भीर और असाध्य बीमारी के लिए औषधियां उपलब्ध हैं बस आवश्यकता है तो सिर्फ इनके सही उपयोग की। जैसा कि हम सब लोगों को बताया और पढ़ाया गया है कि ....

यदि कैंसर अभिशाप है ! तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी वरदान !!

हमें आज भी याद आता है कि सन् 1990 में दिल्ली के प्रगति मैदान में वर्ल्ड हेल्थ ट्रेड फेयर में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक स्टाल लगा था जहाँ पर अन्य कम्पनियों द्वारा अपने–अपने स्टालों को बेहतर ढंग से दिखाने के लिए तरह–तरह के उपक्रम किये गये थे, स्टालों को करीने से सजाया गया था स्टाल में सुन्दर और आकषर्ण छरहरी काया वाली बालायें बैठायी गयी थीं जिन्हें देखकर लोग आकर्षित हों और कुछ क्षण उस स्टाल को भी दे दें वहीं इलेक्ट्रो होम्योपैथीक के स्टाल में सिर्फ एक बड़ा सा पोस्टर लगा था जिस पर भारत वर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी केन्द्रों को इंगित किया गया था तथा पीछे बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था ल्मे ॅम ब्ंअम ब्ूमत ब्व ब्दबमत यह शब्द लोगों को इतना प्रभावित कर रहे थे कि पूरे परिसर में लगे हुए सारे स्टालों की तुलना में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इस स्टाल में सर्वाधिक भीड़ नज़र आती थी और हर आने वाला यही सवाल करता था कि आप इतने विश्वास के साथ कैंसर के बारे में यह कैसे दावा कर रहे हैं ? और सबसे अच्छी बात तो यह थी कि स्टाल को संचालित करने की जिम्मेदारी जिस प्रतिनिधि के पास होती थी वह बड़ी ही सहजता से इसका उत्तर दे देता था समान्य जन से लेकर चिकित्सा विज्ञान से जुड़े व्यक्ति एक जिज्ञासु की भांति कैंसर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विचार जानना चाहता था नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कालेज, नई दिल्ली के कुछ छात्र व होम्योपैथी में रिसर्च कर रहे चिकित्सक निरन्तर यह जिज्ञासा व्यक्त करते थे कि क्या इस तरह से भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कैंसर का इलाज किया जा सकता है ! जब सन् 1990 में इतने दमदार दावे के साथ कैंसर पर अपने विचार दिये जा सकते थे तो आज 26 वर्षों के बाद जब कि हम सब बहुत परिपक्व हो चुके हैं ओर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के काफी जानकार भी हो चुके हैं तो क्यों न हम सब मिलकर इस गम्भीर बीमारी पर अपनी एक राय बनायें और रोगियों को रोग मुक्त करें यह बात सत्य है कि कैंसर का समूल नाश प्रथम व द्वितीय अवस्था के कैंसर में ही होता है यदि तीसरी अवस्था आ जाती है तो दर्द से लाभ तो दिला ही देते हैं, अभी दो तीन वर्षों की पूरानी बात है कि पटना के एक चिकित्सक ने बिहार राज्य के स्वास्थ मंत्री के एक रिश्तेदार जो कैंसर से ग्रसित थे जीवन व मृत्यु से लड़ रहा थे असहनीय वेदना से जो चीत्कार निकलती थी उससे अगल–बगल के लोग भी दुखी हो जाते थे सब उसके मृत्यु की कामना करते थे परन्तु मृत्यु आती नहीं थी, स्वास्थ्य मंत्री का रिश्तेदार होने के कारण प्रदेश और प्रदेश के बाहर अच्छे से अच्छे कैंसर विशेषज्ञों ने उसका इलाज किया परन्तु लाभ नहीं मिला एक चिकित्सक ने तो कह दिया कि घर ले जाइये भगवान पर भरोसा करिये, तभी किसी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नाम सुझा दिया ! मंत्री जी के निर्देश पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक की खोज शुरू हुई और जो चिकित्सक मिला उसने कहा कि इलाज तो मैं करूंगा परन्तु यह स्पष्ट कर दूँ कि रोगी ठीक नहीं होगा परन्तु दर्द से मुक्ति मिल जायेगी हुआ भी यही जैसा चिकित्सक ने कहा था उसने अपना दावा पूरा किया, मंत्री जी गदगद हो गये चिकित्सक के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भी शुभ चिन्तक हो गये मंत्री जी जहां कहीं भी जाते इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चर्चा अवश्य करते।

यहां पर यह उदाहरण लिखने का तात्पर्य यह है कि हमारी औषधियों में इतनी ताकत है कि निसंदेह कैंसर जैसे असाध्य रोग पर नियन्त्रण पाया जा सकता है।

बी0ई0एच0एम0 चिकित्सकों का होगा रजिस्ट्रेशन C.M.O. की स्वीकारोक्ति

यदि आप में सच्चाई व दम है तो उसे मानना ही पड़ता है, गत दिनों C.M.O. हापुड़ ने बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की अधिकारिता हठधर्मी के चलते अस्वीकार कर दी थी, तत्काल इहमाई और बोर्ड ने संयुक्त रुप से कार्यवाही की, कार्यवाही होते ही परिणाम जो निकल कर आया आप के सामने है।

अब हमारे चिकित्सको का दायित्व है कि वे अधिकाधिक संख्या में अपना पंजीकरण आवेदन ~~~~ कार्यालय में प्रस्तुत करें।

प्रेषक: मुख्य चिकित्सा अधिकारी जनपद हापुड़। (email: cmohapur@gmail.com)
पत्रांक–मु0चि0अ0/ बी0ई0एच0एम0/सूचना/2016–17 दिनांक 21.11.2016
सेवा में,
चेयरमेन,
बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसन, उ0प्र0,
1. 8– लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ–226001,
2. प्रशा0 कार्या0 : 127/204 एस जूही, कानपुर–208014
विषय– बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसन, उ0प्र0, के सम्बन्ध मे।
महोदय,
आपके पत्रांक–478/बी0ई0एच0एम0/2016 दिनांक 09.11.2016 के सम्बन्ध मे सादर अवगत कराना है कि उ0प्र0 शासन चिकित्सा अनुभाग–6 के कार्यालय ज्ञाप सं0–2914/पांच–6–10–23–रिट/11 दिनांक 04.01.2012 की छायाप्रति उपलब्ध कराने की कृपा करें। ताकि बी0ई0एच0एम0 अर्हताधारी चिकित्सकों के क्लीनिक पंजीकरण सम्बन्धित कार्य निस्पादित किये जा सकें।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी
जनपद हापुड़।

" एक सर्जिकल स्ट्राइक " की यहाँ भी ज़रुरत

सर्जिकल स्ट्राइक एक ऐसा शब्द है जो हर छोटे बड़े शिक्षित व अशिक्षित की ज़बान पर पूरे देश में आजकल चढ़ा हुआ है , पहले दिन जब इस शब्द का प्रयोग हुआ था तब सम्भवतः इस शब्द के अर्थ बहुत कम लोग जानते होंगे लेकिन जब इस सर्जिकल स्ट्राइक के परिणाम लोगों के सामने आये तो सभी लोग या तो इस शब्द से परिचित हो गये या फिर परिचित होने का प्रयास किया और इसका शाब्दिक अर्थ भी निकाल लिया। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में भी इस तरह के आपरेशनों की आजकल ज़रूरत महसूस की जा रही है क्योंकि जब अराजकता चरम पर पहुँच जाये तो उसका नियन्त्रित होना बहुत आवश्यक होता है अन्यथः स्थिति विस्फोटक हो जाती है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए विभिन्न लोगों या संगठनों द्वारा जिस तरह के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं कदाचित इन कार्यक्रमों के दूरगामी परिणाम शुभ संकेत नहीं दे रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से जिस तरह के विचार हम सबके सामने आ रहे हैं वह सोचने पर विवश कर देते हैं कि आखिर इन लोगों की इच्छा क्या है ?परस्पर प्रतिद्वन्दता इस स्तर तक बढ़ गयी है कि मर्यादायें तार–तार होने लगी हैं, छोटे–बड़े की बात तो छोड़ दीजिए यह विचार एक परिवार के होने का भी संकेत नही दे पाते हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक परिवार है और इसमें कार्य करने वाला हर व्यक्ति एक परिवारिक सदस्य है और सदस्य की यह इच्छा भी होती है कि जिस परिवार से वह जुड़ा है उस परिवार का मान सम्मान बढ़े धन यश व कीर्ति की वृद्धि हो। इसलिए हर सदस्य अपनी तरफ से यह प्रयास करता है कि वह कोई ऐसा काम न करे जिससे कि परिवार की छवि खराब हो और जिसका प्रभाव समाज पर गलत पड़े।

वर्तमान परिस्थितियों को देखकर तो ऐसा लगता है कि ऊपर लिखी हुई सारी बातें या तो किताबी बची हैं या फिर मंचों पर दूसरों को शिक्षा देने के लिए। परस्पर विद्वेष ने कटुता का रूप ले लिया है यदि कटुता से समाज का उत्थान होता हो तो ऐसी कटुता भी बुरी नहीं होती है लेकिन जो कटुता स्वयं व समाज के लिए हानिकारक हो तो ऐसी कटुता का जन्म होना ही गलत है। यद्यपि कटुता बैर भाव का परिचायक होती है और बैर भाव से किया हुआ कार्य कभी भी मंगलकारी नहीं होता।

8 नवम्बर, 2016 को देश के प्रधानमंत्री द्वारा नोटबंदी का जो निर्णय लिया गया उसके अन्दर समाज हित व राष्ट्रहित का भाव छिपा है इसलिए ऐसे निर्णय कष्ट सहन करने के उपरान्त भी विरोध के स्वर गूंजने नहीं देते हैं कभी भी किसी निर्णय को 100 प्रतिशत समर्थन नहीं मिलता क्योंकि जिसकी अपेक्षायें पूरी नहीं होंगी वही निर्णय का विरोध करेगा। आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी जिस स्थिति में है अगर उस स्थिति को इसी तरह से ज़्यादा दिनों तक चलते रहने दिया गया तो यह तय है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति और खराब हो जायेगी। इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हर जिम्मेदार व्यक्ति का यह दायित्व बनता है कि समय की नब्ज को पहचाने और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए जो उचित कदम हो वह उठायें इस बात का निर्णय भी उसे ही करना होगा कि कौन सा कदम आगे की ओर ले जाता है और कौन सा कदम पद्धति को मीलों पीछे ढकेलता है ! यदि यह कठिन निर्णय लेने में हमारे साथी स्वयं को सक्षम नहीं पाते है तो उन्हें शान्त हो जाना चाहिये, यद्यपि यह सम्भव नहीं है कि जो व्यक्ति वर्षों तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन से जुड़ा रहा हो वह शान्त होकर बैठ जाये, यह सत्य है कि मनोदशाओं में आसानी से परिवर्तन नहीं होता है लेकिन यदि व्यक्ति ठान ले तो कोई भी कार्य मुशकिल नहीं होता है। अभी भी गेंद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पक्ष में है सरकारी आदेश और सरकारी अधिकारियों का रूख इलेक्ट्रो होम्योपैथी के समर्थन में ही दिखायी पड़ता है अस्तु अवसर का लाभ उठाते हुए हम सब मिलकर एक ऐसा वातावरण निर्मित करें जो पैथी हिताय के साथ–साथ सर्वजन हिताय भी हो।

चूँकि चिकित्सा पद्धति किसी एक व्यक्ति की नहीं होती है इसका उपयोग और उपभोग समाज का हर व्यक्ति कर सकता है जो इस सत्यता को स्वीकार करे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।

सरकार की कसौटी में खरा उतरना होगा

——हर व्यक्ति का सपना होता है कि वह जिस व्यवसाय से जुड़ा हो वह सम्मानित हो तथा समाज में हर व्यक्ति द्वारा स्वीकारणी हो यदि ऐसा होता है तो उस व्यक्ति का उस व्यवसाय में कार्य करने में मन लगता है तथा अपनी पूरी तन्यमयता के साथ अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में तत्पर रहता है। जहां पर व्यवसाय में कोई परेशानी आती है वह उसको भी दूर करने का प्रयास करता है और प्रयास इस स्तर तक करता है कि उसे सफलता मिले।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी व्यवसाय से जुड़े हर व्यक्ति का यह सपना है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास हो और इस चिकित्सा पद्धति को वही सम्मान मिले जो अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों को प्राप्त है। चूंकि समाज में ज़िन्दा रहने के लिए व अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक होता है कि उसके व्यवसाय की विश्वसनीयता बनी रहे, विश्वसनीयता का महत्व इसलिए है क्योंकि जब विश्वास रहता है तो व्यक्ति के काम में रूचि और सक्रियता दोनों बनी रहती है जब रूचि और सक्रियता होगी तब कार्य का विकास होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में आज इन दोनों चीज़ों के दर्शन नहीं हो रहे हैं लोग कार्य तो कर रहे हैं लेकिन पूरी रूचि के साथ कार्य नहीं करते इसलिए पूर्ण सक्रियता दिखायी नहीं पड़ती है। जब हम इस बिन्दु पर गम्भीरता से चिन्तन करते हैं तो एक बात स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है कि वर्ष 2003 में जो घटनाक्रम घटा और उसके जो परिणाम सामने आये उसने न केवल चिकित्सकों अपितु जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्था संचालक थे उनकी मनोदशा में मूलभूत परिवर्तन ला दिया है इसी परिवर्तन का परिणाम है कि उत्साह की कमी और निरन्तरता के प्रति असाधारण भाव का जन्म लेना। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे–धीरे जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति समर्पित थे उनके मन में अविश्वास ने जन्म ले लिया। और कार्य के प्रति एक नयी संकीर्ण मानसिकता नें जन्म ले लिया और यहीं से प्रारम्भ हुआ इलेक्ट्रो होम्योपैथी का एक नया अध्याय इस अध्याय ने नई–नई परिस्थितियों को जन्म दिया, कहीं ऊर्जा का प्रवाह हुआ तो कहीं मानसिक स्तर में परिवर्तन आया। वर्ष 2004 से 2011 तक जिन विपरीत परिस्थितियों में हम सबने सघंर्ष किया वह अपने होने के निशान छोड़ गया है 21 जून, 2011 आते–आते बहुत कुछ बदल चुका था।

कुछ साथी उदास होकर छोड़कर चले गये थे कुछ जाने के चक्कर में थे और जो बचे वह भी अन्तरद्वन्द से उबर नहीं पा रहे हैं चूँकि जो प्रयास किये जा रहे हैं वह उतने सटीक नहीं बैठ रहे हैं जितने की होने चाहिये स्थितियों ने करवट क्या बदली सब कुछ बदल गया अगर बदला नहीं तो वह है हमारी नियति।

आज एक बार फिर स्थिति वहीं पर आकर खड़ी हो गयी है यदि समय रहते हुए इसपर ध्यान नहीं दिया गया तो कल कुछ भी हो सकता है ! आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी लोग लगे हैं उनकी यही इच्छा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता मिले मान्यता के लिए प्रयास भी किये जा रहे हैं परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं आ रहे हैं ! जब प्रयासों के बाद परिणाम नहीं मिलता है तो मन यह सोचने पर विवश हो जाता है कि आखिर वह कौन सी परिस्थितियां हैं जो अपेक्षित परिणाम नहीं लेने दे रही हैं ? यद्यपि यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने में कोई बाधा नहीं है लेकिन वैधानिक रूप से कार्य करने के लिए जो राजकीय सहयोग और समर्थन की आवश्यकता है वह उत्तर प्रदेश राज्य को छोड़कर अन्य किसी राज्य में दिखायी नहीं पड़ती है उत्तर प्रदेश सरकार ने 4 जनवरी, 2012 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए शासनादेश जारी कर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान हेतु अपनी सहमति दी लेकिन प्रदेश में चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन का आवेदन देना आवश्यक है हमारे चिकित्सकों ने आवेदन प्रस्तुत भी किये लेकिन उनकी संख्या इतनी नहीं थी जो कि लड़ाई को मज़बूत करती, यहीं पर भी परिस्थितियां बदलीं पंजीकरण के नियम बदल गये कल तक जो मुख्य चिकित्साधिकारी सभी चिकित्सकों के पंजीयन का आवेदन स्वीकारता था आज वही मुख्यचिकित्साधिकारी मात्र एलोपैथी चिकित्सकों के आवेदन स्वीकार कर रहे हैं।

वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों के लिए अलग व्यवस्था है आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सकों के लिए आयुर्वेदिक क्षेत्राधिकारी के कार्यालय में आवेदन करना है होम्योपैथी चिकित्सकों को ज़िला होम्योपैथी अधिकारी के यहाँ आवेदन करना है, हमारी स्थिति स्पष्ट है सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई पृथक व्यवस्था नहीं की है और न ही कोई नीति निर्धारित की है ऐसी दशा में हमारा यह सुझाव है कि जनपद में चिकित्सा विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी मुख्य चिकित्साधिकारी ही होता है अस्तु जब तक कोई यथोचित व्यवस्था नहीं होती है तब तक हमें मुख्यचिकित्साधिकारी के यहाँ ही आवेदन करना होता है आवेदन की आवश्यकता इसलिए है कि क्योंकि बिना आवेदन के प्रैक्टिस करना न केवल अवैधानिक है बल्कि प्रदेश में प्रचलित व्यवस्था का उल्लघंन करना है, कल क्या होगा ?यह मात्र कल्पना से पूरा नहीं होगा यदि कल्पना को आकार देना है तो हमें ऐसे कार्य संस्कृति को जन्म देना होगा जो एक नई व्यवस्था को जन्म दें, सरकार से मांगना हमारा अधिकार है, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिये कि अधिकार पाने के लिए अपनी योग्यता सिद्ध करनी होती है और जो कसौटियां बनायी गयीं हैं उनपर हमें खरा उतरना भी होगा यदि समय की मांग के अनुरूप हम परिणाम नहीं दे पाये तो हमारी चुनौतियां व्यर्थ हो जायेंगी। परिस्थितियां पल–पल बदलती हैं सरकार में बैठे अधिकारी की सोच भी बदलती है कभी–कभी तो ऐसा भी होता है जो अधिकारी आज आपके साथ है कल उसकी कलम आपके विरोध में भी हो सकती है यह विरोध आपसे किसी तरह की नराज़गी के कारण नहीं होता है अपितु परिस्थितजन्य होता है। जिस समय अधिकारी को कोई ठोस निर्णय लेना है उस समय परिस्थितियां क्या हैं ? हमें पैनी दृष्टि रखनी होगी और यह सतत प्रयास करते रहने हैं कि परिस्थितियां सापेक्ष रहें और हम हर कसौटी में खरे उतरें शासन सत्ता से हम सहयोग और समर्थन की अपेक्षा तो कर सकते हैं लेकिन यह तभी सम्भव है जब हमारा कार्य सर पर चढ़कर बोले, कार्य को कोई नकार नहीं सकता मान्यता कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन जब तक नहीं मिलती है तब तक यह दूर की कौड़ी नज़र आती है। सबसे बाद में **सोवा रिग्पा** चिकित्सा पद्धति जो एक तिब्बती चिकित्सा पद्धति है इसको तिब्बती धर्मगुरू दलाईलामा जी का आर्शिवाद भी प्राप्त है। सरकार की कसौटी में खरी उतरी और मान्यता मिली। यह संयोग है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के पास किसी ऐसे महापुरूष का आर्शिवाद प्राप्त नहीं है ! जो करना है हमें खुद ही करना है समय अब भी है यदि कमान किसी एक को दे दी जाये और उसे ही महापुरूष मानकर उससे आशीर्वाद की अपेक्षा की जाये तो परिणाम सुखद ही आयेंगे। *लेकिन यह एक अजब संयोग है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सभी महापुरूष हैं।*

अपनी दिवाली कब होगी ?

गतांक से आगे

21 जून, 2011 को भारत सरकार, स्वास्थ्य मन्त्रालय ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा, चिकित्सा व अनुसंधान के लिये एक महत्वपूर्ण आदेश जारी किया जो प्रत्येक प्रदेश व केन्द्र शासित प्रदेशों को अपने–अपने राज्यों में लागू करना है यह अति प्रसन्नता का पत्र था, पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथों के मध्य खुशी की लहर फैल गई लेकिन जैसे–जैसे आदेश की प्रति लोगों के हाथों में पहुँची लोगों का दृष्टिकोण बदल गया और इस बार भी वही हुआ जो प्रायः होता रहता है, हमारे साथी संस्था संचालक व संगठन प्रमुख यह कहने लगे कि यह आदेश मात्र संगठन विशेष के लिये ही है, हम लोग अपने लिये अलग से एक बढ़िया आदेश करायेंगे। यही तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विडम्बना है कि यहाँ पर बिना टाँग खिंचाई के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता इसीलिये लोग खेमों में बंटे हैं आस्थायें भी अलग–अलग हैं जिसका कि लाभ यह तथाकथित इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सेवक उठाते रहते हैं, सेवा के नाम पर मेवा की इच्छा रखने वालों से हम इससे ज्यादा अपेक्षा भी क्या कर सकते हैं ? इसी का परिणाम है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी छिन्न–भिन्न बनी रहती है, विकास के लिये त्याग एवं समर्पण की आवश्यकता होती है सतही तौर पर यह दोनों चीजें खूब दिखाई तो पड़ती हैं परन्तु यथार्थ के धरातल पर मानसिकता भिन्न रहती है, विचार भले ही अलग–अलग हों परन्तु जब उद्देश्य एक होता है तब थोड़ा बहुत उतार चढ़ाव तो देखना ही पड़ता है। हमें यह कहने में कदाचित लेश मात्र भी संकोच नहीं हो रहा है कि दिवाली की इच्छा तो सबके अन्दर है परन्तु जो मन का अंधेरा है उसे दूर करने का तनिक भी प्रयास नहीं कर रहे हैं जिस दिवाली को मनवाने का सब लोग दावा कर रहे हैं उसके लिये क्या प्रयास किया जा रहा ?

यह भी स्पष्ट होना चाहिये, अभी तक जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह मात्र भावनाओं को उभार कर उनका दोहन करना है। मान्यता के विषय में भटका कर हमारे चिकित्सकों को कार्य से विरत किया जा रहा है, मान्यता से खुशी तो मिलती है लेकिन इस खुशी को पाने के लिये सामूहिक प्रयास करने पड़ते हैं, दिवाली जिस उद्देश्य की पूर्ति के उपरान्त पाई हुई खुशी है वह खुशी किसी एक द्वारा नहीं पाई गई इस खुशी के लिये अनेकों लोगों द्वारा समर्पित भाव से कार्य किया गया इसी से प्रेरणा लेकर हम सब इलेक्ट्रो होम्योपैथों को यह संकल्प लेना चाहिये कि वे इतना कार्य करेंगे कि सरकार स्वयं हमारे कार्य से प्रभावित होकर हमारी चिकित्सा पद्धति को मान्यता प्रदान कर दे।

यदि ऐसा होता है तो जो हम यह कल्पना करते हैं कि हमारी कब होगी ? दिवाली का यह इन्तेजार स्वतः समाप्त हो जायेगा।

कार्य से ही सफ़लता सम्भव — डा0 इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वस्तुतः यदि हम स्थापित करना चाहते हैं तो हमें कार्य करना होगा क्योंकि सफलता का मूलमंत्र कार्य में छिपा होता है।

मनुष्य का जन्म लेना और कालकलवित होना सामान्य प्रक्रिया है जो आया है ! वह जायेगा ही !! उसके किये हुये कार्य सदैव याद किये जाते हैं और उनसे प्रेरित होकर भविष्य की नींव रखी जाती है, इतिहास बताता है कि कर्मों से ही व्यक्ति महान बनता है यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महान चिकित्सक डा0 नन्दलाल सिन्हा की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने व्यक्त किये। डा0 इदरीसी ने कहा कि जो व्यक्ति महान होते हैं उनकी महानता के पीछे उनके किये गये कार्य ही होते हैं और यदि वह कार्य जनहित में किये गये होते हैं तो सदियों तक उन्हें याद किया जाता है, ऐसा नहीं है कि स्व0 नन्दलाल सिन्हा के पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं हुआ था पहले भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में योग्य व महान चिकित्सकों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य किये जिनमें से डा0 एस0 पी0 श्रीवास्तव, डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना, डा0 वी0 एम0 कुलकर्णी (सभी यश शेष) के नाम प्रमुखतः से लिए जा सकते हैं।

डा0 नन्दलाल सिन्हा ने वह कार्य किये जिससे स्वतन्त्र भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ। आज उनके कार्यों की प्रासंगिकता फिर बढ़ गयी है क्योंकि अब वह समय आ गया है जब अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो कार्य के द्वारा समाज के बीच अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी होगी।

डा0 सिन्हा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई उन्होंने कैंसर जैसे असाध्य रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दावेदारी बतायी साथ–साथ रोगियों को लाभ भी दिया कुष्ठ जैसे गम्भीर रोग पर भी डा0 सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध की। अब हमें सब चिकित्सकों को मिलकर उस पुरानी दावेदारी को सही सिद्ध करके दिखाना है। डा0 इदरीसी ने अतीत को स्मरण करते हुए बताया कि स्व0 सिन्हा के काम करने का ढंग अलग ही था यह बहुत विश्वासपूर्वक अपनी पैथी पर भरोसा करते थे उन दिनों कैंसर के नाम से लोग काँपते थे, कैंसर जानलेवा बीमारी हुआ करती थी, आज की तरह उत्कृष्ट मशीनें नहीं थीं और न ही कीमोथेरेपी का जन्म हुआ था, कोबाल्ट और रेडियम की किरणों से रोगियों के रोगग्रस्त स्थान पर

सिंकाई की जाती थी। बात सन् 1973–74 की है जब कानपुर जैसे पूरे शहर में बड़ी–बड़ी होर्डिंगे लगा करती थीं जिनमें हाथ का पंजा बना होता था बांई तरफ और दांई तरफ लिखा होता था ठहरिए ! कोबाल्ट और रेडियम रेज़ लगवाने से पहले कैंसर रोगी मिलें !! यह यहाँ पर लिखने का मतलब यह है कि डा0 सिन्हा मान्यता से ज़्यादा काम करने पर ध्यान देते थे उनका मानना था कि काम बोलता है।

हम काम के दम पर मान्यता पायेंगे !
मान्यता मांग कर नहीं मिलती,
कार्य के परिणामों से मिलती है !!

इसका जीता जागता उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता जाँच के लिए दिये गये कुष्ठ रोगियों के ऊपर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का प्रयोग कर उन्हें आराम दिलाया और सरकार को विवश किया कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारे। इसी का परिणाम था कि 27 मार्च, 1953 का वह अर्धशासकीय पत्र जो प्रदेश सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जारी किया था। यह उदाहरण यह सिद्ध करता है कि कार्य की महत्ता श्रेष्ठ है, दुर्भाग्य से आज कार्य के स्थान पर माँगों पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है, मान्यता एक ऐसा मुद्दा बना दिया गया है और ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया है कि जैसे बिना मान्यता के कार्य की आवश्यकता ही नहीं है जबकि सत्य यह है कि पहले की तुलना में आज कार्य करने में ज़्यादा आसानी है औषधियों की उपलब्धा भी बढ़ी है माँग और पूर्ति का अनुपात लगभग बराबर है। फिर भी कार्य के प्रति लोगों की रूचि नहीं है तो आइये आज 30 नवम्बर, 2016 के दिन हम सब चिकित्सक यह संकल्प लें कि इतना कार्य करें जिससे सरकार हमें मान्यता देने पर विवश हो जाये। आपको बता दें कि डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था और पूरा देश 30 नवम्बर का दिन सिन्हा जयन्ती के रूप में मनाता है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा0 प्रमोद शंकर बाजपेयी ने कहा कि डा0 इदरीसी ने जो वास्तविक दृश्य अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं निसन्देह उसपर चलकर ही सफ़लता अर्जित की जा सकती है, भावनाओं के लिए स्थान तो है लेकिन कर्तव्यों पर भावनायें हावी नहीं होनी चाहिये, हर व्यक्ति को अपनी योग्यता का मान होता है, हर चिकित्सक को समतानुसार चिकित्सा करनी होगी जो कुछ यदि हमें नहीं आता है तो साथी चिकित्सक से पूछने में कोई परहेज़ नहीं करना चाहिये, एक दूसरे से पूछने में ज्ञानवृद्धि होती है, कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, हमें किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से स्वयं की तुलना करनी चाहिये, हम जिस पद्धति के हैं उसी पर गर्व करते हैं और गर्व से कार्य करना चाहिये, आज कार्य को प्रमुखतः दें कल अच्छे परिणाम आपकी प्रतिक्षा करेंगे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि परिस्थितियां लाख बदल जायें परन्तु कार्य की गति नहीं बदलनी चाहिये क्योंकि परिस्थितियां समय के वशीभूत होती हैं लेकिन कार्य मनुष्य के अधीन होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह एक दुःखद पहलू है कि यहां पर कामनायें तो हर एक व्यक्ति करता है लेकिन कामना की पूर्ति के लिए जो आवश्यक कार्य हैं उनसे विरत रहता है, हमें कार्य संस्कृति को पुनर्जीवित करना है, ऐसे संस्कारों को जन्म देना है जो कार्य को प्रमुखता दें, सिन्हा जयन्ती की सार्थकता मात्र फूल माला चढ़ाकर रस्म अदायेगी से नहीं होनी चाहिये अपितु कार्य करके होनी चाहिये, मान्यता के भूत से ऊपर उठकर कार्य करते हुए मान्यता लेने का प्रयास होना चाहिये जिन लोगों ने आज कार्य करने का संकल्प लिया है वह अपने संकल्प को पूरा करके दिखायें, प्रायः यह देखा जाता है कि संकल्प तो लोग ले लेते हैं लेकिन उसपर अमल नहीं करते हैं। अन्त में कार्यक्रम के संयोजक डा0 अतीक अहमद रजिस्ट्रार बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे सभी पूर्व वक्ताओं ने कार्य की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की परन्तु यह नहीं बताया कि कार्य कैसे किया जाये ?हमारे चिकित्सक बहुत सीधे हैं, उन्हें यह बताना होगा कि कार्य कैसे किया जाये ?मेरे हिसाब से हर चिकित्सक को चाहिये कि अपने पंजीकरण को ठीक करा ले और अपने क्लीनिक के बाहर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक का स्पष्ट बोर्ड लगाये, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का ही प्रयोग करे और इन्हीं औषधियों से रोगी की चिकित्सा करे, हाँ! एक बात और है प्रदेश में वैधानिक रूप से चिकित्सा करने के लिए सी0 एम0 ओ0 कार्यालय में पंजीयन हेतु आवेदन अवश्य प्रेषित कर दें जब तक सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अलग से व्यवस्था नहीं की जाती है तब तक सी0 एम0 ओ0 ही हमारा अधिकारी होगा वैसे बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थाई व्यवस्था के लिए प्रयास रत है, शीघ्र ही परिणाम आयेंगे, भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग आप से मान्यता की बात करें आप उनसे कहें कि आप भी काम करें और हमें भी करने दें फिर हम दोनों मिलकर मान्यता की लड़ाई लड़ेंगे, मान्यता तो मिलनी ही है आज नहीं तो कल लेकिन यदि आज काम नहीं किया तो कल का इंतजार व्यर्थ है।

आज के दिन की सार्थकता कार्य से है इसलिए प्राथमिकता के आधार कार्य को स्थान दें कार्यक्रम को अन्य व्यक्ताओं ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन डा0 मारिया इदरीसी ने किया व धन्यवाद डा0 स्वालेहा इदरीसी ने किया, श्री वसीम इदरीसी व श्री नसीम इदरीसी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

Nuchal Cord – 9 Facts About A Cord Around Baby's Neck

A nuchal cord — or a cord around the neck — is one of many things mothers-to-be fear about childbirth.

The thought of your baby being 'strangled' by the umbilical cord can cause so much worry. Fortunately, a normal, healthy umbilical cord is protected from blood vessel compression. Babies receive nutrients and oxygen via the umbilical cord, not by breathing through their nose or mouth. They don't actually breathe until after the birth, when they take in that first breath of oxygen into their lungs. This is one of the many reasons why it's important to leave a baby's umbilical cord intact (uncut) for *at least* 2 minutes after the birth.The cord will continue to provide oxygen, and is the life support system for the baby, until his head is born and oxygen hits his nose. It's the very same reason why babies don't drown during a water birth, because they have an oxygen supply already attached. They don't take their first breath until they are stimulated by air. *But what about when the cord is around baby's neck?*

NUCHAL CORD FACTS

Here are some interesting facts about a nuchal cord,

It's common to hear stories of babies being born with the cord wrapped around their neck. The reason for this is because… nuchal cords are very common. Some doctors and midwives don't even mention it during childbirth, because they simply loop the cord over the baby's head when he or she is crowning. It's usually no big deal. Unless it's a dire emergency, the cord should be left alone during the birth, to prevent further compression or complications.

Studies report figures of up to one third of babies being born with a cord around their neck – that's 1 in 3 babies.

Cords come in a range of lengths. In this study, cord length ranged from 19 to 133 centimetres. The average umbilical cord length is around 50-60 centimetres long.

The long umbilical cords seemed to be associated with the increased rate of multiple nuchal cords and true umbilical knots… however long umbilical cords did not contribute to adverse perinatal outcomes by themselves. In theory, fetal movement produces a tension on the cord that creates ample free length for delivery plus the length of the wrapped cord. Although an entangled cord may be at risk for intermittent or partial occlusion [blockage] of umbilical blood flow as previously reported, the excessively long cord may have self-protective effects to protect the fetuses from the risk of decreasing umbilical blood flow."

2: A Healthy Umbilical Cord Is Protected By A Slippery, Soft Coating

The human body is ever surprising with its clever design. Our bodies have been built to ensure our survival as a species. Even the umbilical cord has it's own set of party tricks. A normal, healthy umbilical cord is filled with *Wharton's jelly*, a soft, gelatinous substance which protects the blood vessels inside the cord. result of the baby's normal movements. If a medical condition was impacting the amount of Wharton's jelly in the cord, or if the cord was not in good condition, then perhaps there may be complications. However, the umbilical cord is carefully designed for uterine life. For the vast majority of babies, the cord is well protected.

Although this is not a nuchal cord, look at the impressive cord bundle a set of twin girls managed – and are happy and healthy today.

3: A Nuchal Cord Does Not Get Tighter As Labour Progresses

"The baby is not 'held up' by the cord because the whole package — fundus (top of the uterus), placenta and cord are all moving down together. The uterus 'shrinks' down (contracts) moving the baby downwards, along with their attached placenta and cord. It's not until the baby's head moves into the vagina, that a few extra centimetres of additional length are required. However, when a c-section is done for 'fetal distress' or 'lack of progress' during labour, the presence of a nuchal cord is often used as the reason… "ah ha, look " your baby was stressed because the cord was around his neck" or "…the cord was stopping her from moving down". The cord is unlikely to have had anything to do with the stress or lack of progress." Some women say their baby's heart rate was dropping when they were pushing. Studies have proven this is normal behaviour for a baby experiencing pressure around the head.

"There was a very high incidence of abnormal FHR [fetal heart rate] during the second stage of labor, however, the most cases were response to parasympathetic stimulation due to umbilical cord or fetal head compression by mothers over push and descent of fetal head, or temporal diminishing of uterine placenta blood flow. It suggests that it is unnecessary to interfere immediately, unless truly fetal distress."

4: A Nuchal Cord Is Not Often Associated With Adverse Outcomes

This may be hard to believe or hear, especially if you've lost a baby and his or her cord happened to be wrapped around the neck. Since one out of three babies is born with a nuchal cord, it makes it quite likely that a nuchal cord will also be present in babies born with complications too. However, several studies have reported that a cord around the neck is unlikely to be *the main cause* for adverse out comes. "Nuchal cord is not associated with adverse perinatal outcome. Thus, labor induction in such cases is probably unnecessary."Many other conditions (including unknown complications) can cause adverse outcomes, making it very easy to blame the visible cord around the neck. Stillbirth and loss is still an area of much needed research. Doctors and researchers themselves can't be certain what causes 100% of cases.

But hopefully, we'll continue to make key discoveries over time. Something parents can do if they are worried about their baby is to keep an eye on ***Baby kicking.***

5: Even With A 'Tight' Nuchal Cord, There Isn't An Increased Risk of Cord Accidents

Even a tight nuchal cord isn't uncommon. A recent study found a tight nuchal cord occurred in 6.6% of over 200,000 consecutive live births, where they classed 'tight' as being unable to manually unloop the cord over the baby's head.

In their findings, they state:

"Those with a tight nuchal cord were not more likely to have dopamine administered or blood hemoglobin measured on the first

day, nor were they more likely to receive a transfusion or to die."

6: A Nuchal Cord Is Not An Indication For A C-Section

If you really want to avoid complications relating to cords, then don't rupture the membranes [break the waters] to avoid cord compression — a much greater risk than a nuchal cord. Incidentally when the cord is around the neck, it is often protected from compression.

" Women need to bear in mind that obstetric training provides graduates with medical and surgery training. The graduates will not be trained in research, nor be required to continue to do any research. They've learned medicine in a medicalised system, with content often sponsored by pharmaceutical and technology companies. They are not researchers, and they have very little, if any experience or knowledge about physiological birth."

7: Nuchal Cord Accidents Are Very Low

"Nuchal cord alone was not considered a cause of death. This important cause of stillbirth has been somewhat overlooked in prior studies because of the difficulty in differentiating between harmless nuchal cords and cord conditions associated with pathophysiology leading to stillbirth."When you do the maths, the likelihood of a genuine cord accident due to being wrapped around the baby's neck, cutting off oxygen, is very small. In fact, it may not even be the underlying problem at all. There may be a visible nuchal cord, leaving everyone thinking it's a no-brainer as to the cause of death. But without an autopsy (which parents may or may not feel comfortable having done), other reasons may be completely overlooked.

8: Even Multiple Loops Aren't More Harmful

The number of loops is not important. Remembering from above, the uterus, placenta and cord all move down with the baby during labour, as long as the cord is long enough to get the baby's head out (i.e. the length of the vagina — which is not long when stretched into a baby's head shape) then the rest of the baby can come out. It's extremely rare — but possible — that the cord is too short to allow descent of the baby. Then you would get a lack of progress and eventual fetal distress… often these babies get into a breech position before labour."

9: It's Usually Another Intervention Which Causes Fetal Distress

Inductions of labour, especially with synthetic oxytocin (Syntocinon in Australia or Pitocin in the US) can cause fetal distress. Once you're hooked up to the drip, it will remain on until after the birth. Many mothers-to-be accept an epidural after these inductions, because synthetic oxytocin can make the uterus work very hard. Artificial oxytocin doesn't work the same as natural oxytocin (doesn't cross the blood-brain barrier) nor are the contractions like natural labour contractions.

With an epidural in place, the mother-to-be can't feel a thing, but her baby is still under the effect of the strong, constant contractions due to the synthetic oxytocin. The uterus works harder and faster, meaning the blood and oxygen supply can easily become compressed — not just from the induction, but also because the mother is now immobilised, flat on her back. This can lead to the baby becoming distressed, requiring an emergency c-section. Then everyone thanks the doctor for saving the baby.

यह लेख आपको कैसा लगा अपने सुझाव हमारे वेबसाइट पर प्रेषित करें अथवा आप हमें पत्र व्यवहार करके भी अपने सुझाव भेज सकते हैं पता है :

सम्पादक,
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 "एस" जूही,
कानपुर–208014, उ0प्र0